The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 7 | July 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF(2026): 5.6
Website: www.theacademic.in

सूर्यकान्त त्रिपाठी ''निराला'' की कविता 'तोड़ती पत्थर' में स्वनिर्भर स्त्री के दर्षन

हर्षिता माहेश्वरी

(शोधार्थिनी–हिन्दी विभाग), किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय (स्वायत्तशासी) बहराइच, उत्तर प्रदेश, भारत,

ई–मेलः harshimaheshwari99@gmail.com

डॉ0 ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी

(शोध निर्देशक), असिस्टेंट–प्रोफेसर (हिन्दी विभाग), किसान स्नातकोत्तर महाविद्यालय (स्वायत्तशासी) बहराइच, उत्तर प्रदेश, भारत, ई–मेलः gyanendra@kisanpgcollege.ac.in

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.22098406

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Received: 23-06-2026

Accepted: 16-07-2026

Published: 21-08-2026

Keywords:

स्त्री, स्वनिर्भरता के आयाम, श्रम, पितृसत्ता, सामाजिक भेदभाव।

ABSTRACT

हिन्दी साहित्य के छायावाद के महत्वपूर्ण चार स्तम्भो में से एक स्तम्भ माने जाने वाले रचनाकार सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' ने अपने प्रसिद्ध काव्य संग्रह ''अनामिका'' की कविता ''तोड़ती पत्थर'' में भारत की स्त्री की स्वनिर्भरता, संघर्ष''ीलता, श्रम''ीलता और स्वाभिमान का प्रभाव''ाली ढ़ंग से चित्रण किया गया है। कविता में चित्रित पत्थर तोड़ती हुई स्त्री केवल एक श्रमिक महिला नही है बल्कि, वह प्रतीक बन गई है, सम्पूर्ण स्त्री जगत की स्वनिर्भरता, साहस व कर्म''ीलता का साथ ही निराला ने यह भी व्यक्त किया है कि किस प्रकार जीवन की विपरीत परिस्थितियों, आर्थिक अभावों और सामाजिक विषमता के बावजूद पत्थर तोड़ती हुई स्त्री अपने श्रम के बल पर अपना जीवनयापन करती है। स्त्री का यह स्वरूप उसकी ''ाक्ति, सामर्थ्य और कर्मनिष्ठता को व्यक्त करते हुए उसके स''ाक्त व्यक्तित्व को भी व्यक्त करता है। स्त्री स''ाक्तिकरण का अर्थ ''ाक्ति पर स्त्री का अधिकार नही, बल्क स्त्री को उसकी विस्मृत ''ाक्ति, क्षमता व आत्मवि''वास को पुनः स्मरण कराकर, उसके अधिकारों के प्रति सचेत करना है और साथ ही उन्हें स्वनिर्भर बनाना है। निराला जी की कविता ''तोड़ती पत्थर'' में पत्थर तोड़ने वाली स्त्री किसी सहारे की प्रतीक्षा नही

Disclaimer: The opinions, interpretations, conclusions, recommendations, analyses, and statements expressed in this research article are solely those of the author(s) and do not reflect the views, policies, or positions of the Publisher, Chief Editor, Editors, Editorial Board, Reviewers, or their affiliated institutions. The author(s) are solely responsible for ensuring the originality, authenticity, and integrity of the manuscript and for ensuring that it is free from plagiarism, AI-generated content, copyright infringement, data falsification, and any other form of academic misconduct.

करती है, बल्कि अपने श्रम को ही अपना अस्त्र मानते हुए हर परस्थिति में अपने कर्म में लीन रहती है और अपने श्रम को ही अपने सम्मान व पहचान का आधार बनाती है।

प्रस्तावना–हिन्दी साहित्य में सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' मात्र एक छायावादी रचनाकार के रूप में नही, बल्कि एक जन चेतना के प्रतिनिधि बनकर हमारे सामने आते है। 'निराला' ने मुख्यधारा के साहित्य में अपेक्षित महत्व न मिले हुए समाज के वर्गों को अपने साहित्य में स्थान दिया है, जैसे–भिक्षुक, विधवा, श्रमिक आदि। 'निराला' एक प्रगतिशील चेतना से युक्त साहित्यकार है, जिन्होने अपनी कविता 'तोड़ती पत्थर' में क्रमशः साहित्य और समाज में उपेक्षित माने जाने वाले श्रमजीवी वर्ग को अपनी कविता का केन्द्र बनाया है। निराला ने 'तोड़ती पत्थर' कविता में पत्थर तोड़ती स्त्री द्वारा पत्थर तोड़ने जैसा जटिल और सामान्य तौर पर निम्न माने जाने वाले श्रम को अपनी कविता का विषय बनाकर श्रम की महत्ता दिखाई है और साथ ही पत्थर तोड़ती स्त्री के श्रम संघर्ष द्वारा समाज के मूलभूत ढ़ाँचे में परिवर्तन लाने का प्रयास भी किया है।

प्रगतिशील कविता की मूल संवेदना मात्र व्यक्तिगत अनुभवों तक सीमित नही होती बल्कि वह समाज में हो रहे भेद–भाव, वंचित वर्गों के प्रति उदासीनता, श्रम संघर्ष और नये समाज निर्माण की तीव्र आकांक्षा से भी जुड़ी होती है। इसी संदर्भ में डॉ0 ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी एवं डॉ0 सोनम शुक्ला लिखते है कि ''प्रगतिशील कविता व्यक्तिगत कुंठा–हताशा–निराशा या पीड़ा वेदना की कविता नही है, बल्कि यह मुक्ति हेतु संघर्ष, जीवन के प्रति आशा और नई चेतना की कविता है। इन कविताओं में वर्णित मुक्तकामी संघर्ष की प्रेरणा ही समाज के वंचित–शोषित वर्ग के लोगों के एक नई चेतना, आत्मविश्वास, गौरव को भावना का संचार करती है।''[1] उपयुक्त कथन से स्पष्ट है कि प्रगतिशील कविता का मुख्य स्वर व्यक्तिगत निराशा, कुंठा या पीड़ा न होकर संघर्षशीलता, आत्मनिर्भरता, नवीन आशा और अदम्य साहस पर बल देना है। निराला की कविता की पत्थर तोड़ती स्त्री भी अपने श्रम संघर्ष की पीड़ा से दुःखी नही है, बल्कि कड़ी धूप में कठोर श्रम करके सिद्ध कर रही है कि श्रम के द्वारा वो अपनी जीवन के संचालक स्वयं है।

'तोड़ती पत्थर' कविता में वर्णित एक श्रमिक स्त्री के माध्यम से निराला में सम्पूर्ण स्त्री जाति के संघर्ष, कर्मनिष्ठता और स्वनिर्भरता को व्यक्त किया है। कविता में वर्णित स्त्री विपरीत परिस्थितियों के बीच भी किसी पर आश्रित न होते हुए, स्वयं के श्रम के द्वारा अपनी कर्मनिष्ठता का परिचय देती है और अपने जीवन को स्वयं संचालित करती है। ''तोड़ती पत्थर'' कविता बाहरी तौर पर देखने में एक श्रमिक स्त्री की कहानी कहती हुई दिखाई देती है परन्तु भीतरी तौर पर देखने पर स्त्री के स्वनिर्भरता, स्वावलंबन, संघर्ष और सामाजिक योगदान की गाथा बन जाती है। स्त्री की वास्तविक स्वतंत्रता उसकी आर्थिक और मानसिक स्वनिर्भरता में निहित होती है और और पत्थर तोड़ती हुई स्त्री भी अपने श्रम को माध्यम बनाकर अपने स्वनिर्भरता, स्वाभिमान और स्वविश्वास का परिचय देती है। वर्तमान समय में भी अनेक नारियाँ सामाजिक, आर्थिक और पारिवारिक चुनौती का सामना करती हुई नजर आती है, जिनमें निराला की कविता की पत्थर तोड़ती हुई स्त्री जैसे ही संघर्षशीलता और स्वनिर्भर स्त्री की छवि दिखाई देती है। ''तोड़ती पत्थर''

कविता केवल उस युग की कविता नहीं है, बल्कि प्रत्येक युग की स्त्री के संघर्ष का जीवंत दस्तावेज है, जो व्यक्त करता है कि स्त्री मात्र सहानुभूति की नही, बल्कि सम्मान, समान अवसर और स्वनिर्भर बनने के लिए अनुकूल वातावरण की अधिकारिणीं है।

तोड़ती पत्थर : एक अवलोकन

तोड़ती पत्थर कविता निराला के प्रसिद्ध काव्य संग्रह 'अनामिका' (द्वितीय) में संकलित है इसे सबसे पहले सन् 1937 में 'सुधा' नामक मासिक पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। तोड़ती पत्थर कविता एक श्रमिक स्त्री की संघर्ष, कड़ी मेहनत और उसके अदम्य साहस की कथा है। पत्थर तोड़ती स्त्री किसी पर आश्रित न होकर स्वयं अपने कर्म में लीन है और अपने स्वनिर्भर होने का परिचय देती है।

1. तोड़ती पत्थर : पितृ सत्ता के प्रति मौन प्रतिरोध

पितृसत्ता एक ऐसी व्यवस्था है, जहाँ समाज में पुरूष को निर्णय लेने, सत्ता और संसाधनो पर स्त्रियों से अधिक अधिकार प्राप्त है। स्त्री की भूमिका और उसकी स्वतंत्रता को पुरूष प्रधान सामाजिक मानदंडो के भीतर निर्धारित किया जाता है। स्त्रियां अक्सर पुरूषों पर आश्रित होने के कारण स्वयं के अस्तित्व को भूल जाती है। पितृसत्ता की इसी अवधारणा को डॉ0 सी. मोहना ने व्यक्त किया है, वे लिखती है कि ''पितृसत्ता स्त्री को परिवार की 'मर्यादा' का प्रतीक मानती है, परन्तु उसे विश्वास और समानता का अधिकार नही देती।''[2] स्त्रियों से पुरूष द्वारा बनाए गए नियमों और आदर्शों का पालन करने की अपेक्षा की जाती है।

निराला की कविता 'तोड़ती पत्थर' में पत्थर तोड़ती स्त्री स्वयं कठिन परिश्रम और संघर्ष करके अपने स्वतंत्र अस्तित्व का नींव रखती है। वह सिद्ध करती है कि स्त्री को पुरूष पर किसी भी रूप में आश्रित होने की आवश्यकता नही है, बल्कि यदि स्त्रियां स्वयं स्वालंबी हो जाए तो पितृसता की जड़ ही खत्म हो जाएगी। निराला 'तोड़ती पत्थर' कविता में स्त्री को आश्रित या निष्क्रिय रूप से प्रस्तुत नही करते बल्कि वह उसे श्रम, संघर्ष और आत्मबल से सम्पन्न एक स्वालंबी स्त्री के रूप में हमारे सामने लाते है। निराजा द्वारा स्त्री को पुरूष आश्रित भूमिका से बाहर लाकर स्त्री द्वारा श्रम व संघर्ष करवाना पितृ सत्तात्मक दृष्टि का अप्रत्यक्ष प्रतिरोध है।

2. तोड़ती पत्थर : भाषा का सहज रूप

जब कविता की परिस्थिति एवं संघर्ष को समाज से जोड़ना हो तो कविता की भाषा में कृत्रिमता और जटिलता के स्थान पर सहजता का प्रयोग आवश्यक है। कविता की भाषा के इसी प्रयोग के विषय में डॉ0 सोनम शुक्ला एवं डॉ0 ज्ञानेन्द्रमणि त्रिपाठी लिखते है कि ''भाषा का अविष्कार मनुष्य ने सामाजिक आदान–प्रदान, अपने व्यक्तिगत अनुभवों–विचारों को समाज एक संप्रेषित करने के लिए किया है।''[3] निराला ने भी 'तोड़ती पत्थर' कविता की संवेदनाओं को समाज से जोड़ने हेतु भाषा की कृत्रिमता और जटिलता का त्याग करते हुए सरत सहज और प्रभावपूर्ण भाषा का

प्रयोग किया है। निम्न पंक्तियों द्वारा व्यक्त होता है कि किस प्रकार वे किसी निराडंबर और सहज रूप से कवि ने श्रमिक स्त्री के जीवन का पूरा सामाजिक यथार्थ पाठक के सामने रख दिया है–

''श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय–कर्म–रत मन,
गुरू हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार,
सामने तरू–मालिका अट्टालिका प्रकार।''[4]

3. तोड़ती पत्थर : सामाजिक व्यवस्था के प्रति अंतर्विरोध

जब किसी कवि की दृष्टि में सामाजिक भेदभाव के प्रति संवेदना के साथ कटु आक्रोश भी भरा हुआ होता तो वो कई बार उनके काव्य में व्यंग्यात्मक रूप ग्रहण कर लेता है। इसी संदर्भ में कविता में व्यंग्य के प्रयोग के विषय में डॉ0 ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी लिखते है कि ''भारतीय जीवन का कटु यथार्थ कवि में आक्रोश पैदा करता है और यही आक्रोश उन्हें व्यंग्य के सृजन की ओर अग्रसर करता है। वस्तुतः व्यंग्य का मूल निहितार्थ मानवीय संवेदना तथा सरोकार से सम्पन्न एक ऐसे कवि की चिंता होती है जो कही न कही अपने समय से विक्षुब्ध है।''[5] निराला ने भी इसी प्रकार 'तोड़ती पत्थर' कविता में मात्र संघर्ष को ही नही बल्कि समाज में व्याप्त अंतर्विरोधों को भी व्यक्त किया है। कविता में श्रमिक स्त्री किस प्रकार से एक बार निराला को और उस आलीशान भवन को जो उसके सामने है, देखती है फिर अपनी नजर हटा लेती है। इस विषय से सम्बन्धित निम्न पंक्तियां यहाँ उस श्रमिक स्त्री की उसी दृष्टि का उल्लेख करती है–

''देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार,
देखकर कोई नही,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नही''[4]

यहाँ कविता में जो व्यंग्य का प्रयोग हुआ है वो किसी व्यंक्ति पर न होकर सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था पर है, जहाँ कठोर श्रम करने के बावजूद भी वह श्रमिक स्त्री अभाव से भरे हुए जीवन को जी रही है, वही उसके सामने ऐश्वर्य का प्रतीक भवन मौजूद है। फिर भी श्रमिक स्त्री अपने संघर्ष पर विश्वास रखते हुए, अपने कार्य में पुनः लीन हो जाती है।

3. तोड़ती पत्थर : परिवेश की अभिव्यक्ति

''तोड़ती पत्थर'' कविता में 'इलाहाबाद' नगर का उल्लेख कविता को स्थान विशेष का जीवन–परिवेश को हमारे सामने प्रस्तुत करता है–

''वह तोड़ती पत्थर,

देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथर पर''[4]

तोड़ती पत्थर कविता में 'इलाहाबाद' नगर का उल्लेख वहाँ के स्थानीय जीवन का यथार्थ हमारे सामने प्रस्तुत करता है। निराला ने इलाहाबाद के पथ पर पत्थर तोड़ती स्त्री के माध्यम से नगर जीवन के श्रमजीवी सामाजिक सत्य से हमारा सामना कराया है। 'तोड़ती पत्थर' कविता से हमें ज्ञात होता है कि अंचल का स्वरूप ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित नही है, बल्कि नगरीय जीवन संदर्भ के रूप में हमारे सामने आता है।

पत्थर तोड़ती हुई स्त्री का चित्रण करते हुए निराला ने इलाहाबाद के उस क्षेत्र में दिखाई देने वाले श्रमिक जीवन, अभावग्रस्त जीवन और सामाजिक भेदभाव को अपनी कविता का आधार बनाया है। इस प्रकार 'इलाहाबाद' मात्र एक भौगोलिक संकेत न रहकर एक विशिष्ट अंचल विशेष के रूप में हमारे सामने प्रस्तुत होता है, जिसके माध्यम से वहाँ की सामाजिक परिस्थितियां और जीवन प्रवृत्तियों का बोध हमें होता है। जब हम अंचल की अवधारणा की बात करते है तो उसे मात्र ग्रामीण जीवन को या ग्रामीण क्षेत्र तक सीमित समझने का भ्रम हमें हो जाता है जबकि अंचल का सम्बन्ध तेा किसी विशेष स्थान की जीवन प्रवृति, सामाजिक ढ़ांचे, संस्कृति, व्यवहार आदि से होता है। डॉ0 ज्ञानेन्द्र मणि त्रिपाठी ने अंचल की अवधारणा के विषय में विचार प्रकट किया है, वे लिखते है कि ''अगर कोई अंचल का अर्थ ग्रामीण अंचल से लगाता है तो हमें उसकी बौद्धिकता पर संदेह का अवसर मिल जाता है क्योंकि यह अंचल गाँव का भी हो सकता है और नगरों का भी। यह अंचल एक कस्बा भी हो सकता है एक मुहल्ला भी।''[6] इस विचार के आलोक में 'तोड़ती पत्थर' कविता में प्रयुक्त 'इलाहाबाद' नगर के वर्णन को देखते है, तो स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि अंचल का स्वरूप मात्र ग्रामीण परिवेश से नही, बल्कि किसी विशेष स्थान के जीवन अनुभव, सामाजिक प्रवृत्ति से भी जुड़ा हुआ होता है।

स्त्री का स्वरूप–

स्त्री के स्वरूप को लेकर समाज और साहित्य में एकरूकता नही रही है, कभी तो स्त्री को देवी मानकर त्याग ममता और पवित्रता जैसे पारंपरिक आदर्शों की मूर्ति बना दिया जाता है, जिससे उसके स्वतंत्र मानवीय अस्तित्व की सीमा निर्धारित हो जाती है। दिपाली गंगवार स्त्री को देवत्व रूप देने के विषय में अपने विचार प्रकट करती है, वे लिखती है कि ''अमूमन देखा गया है कि भारतीय समाज में स्त्रियों को 'देवी' माना जाता है, यह धारणा प्रतिस्थापित करने के पीछे का भाव उन्हें तथा कथित, संस्कारो से ओत–प्रोत, मर्यादा व भावुकता के आदर्श रूप में प्रस्तुत कर स्त्रियों का अपनत्व हनन करना है। इस भावुकता व संस्कार के चलते वे अपनी अस्मिता से अनभिज्ञ रह जाती है।''[7]

देवीत्व की यह अवधारणा स्त्री को सम्मान प्रदान करने के साथ ही उसके अस्तित्व को त्याग, सहनशीलता, पवित्रता और आदर्श की सीमा में बांध देते है। वह स्वयं अपने अस्तित्व की निर्माता न होकर समाज द्वारा बनाए गए उसके अस्तित्व की सीमा में बंध जाती है। दूसरी ओर कभी वही समाज और साहित्य स्त्री को मात्री हाड़–मास का पुतला मान लेता हूँ, जिसका स्वयं का कोई अस्तित्व माना है ही नहीं। स्त्री को मात्र शारीरिक रूप या ब्राह रूप से

देखने के विषय में दीपाली गंगवार अपने विचार प्रकट करती है, वे लिखती है कि ''हिन्दी साहित्य के प्रारंभिक दौर में स्त्री दैहिक विषय थी, जिसको सौंदर्यात्मक वस्तु के रूप में केंद्रित किया जाता रहा। यह समस्या वर्तमान समय में भी व्याप्त है, आज भी अनगिनत प्रेम कविताएं ध्वस्त हो जाए। अगर उससे स्त्री देह को निकाल दिया जाए। भारतीय समाज को बौद्धिकता के स्तर में बढ़ोत्तरी करने की आवश्यकता है, जिससे स्त्री को देह से परे देख पाने की समझ विकसित हो सकें।''[7]

इसी प्रकार या तो समाज और साहित्य स्त्री को देवी बनाकर एक आदर्श प्रतिमा बनाता है या उसके ब्राहा रूप तक उसे सीमित करते हुए उसके स्वतंत्र अस्तित्व को पीछे कर देता है। 'तोड़ती पत्थर' कविता में निराला ने पत्थर तोड़ने वाली स्त्री को कोई देवी माना है, न ही उसके ब्राहा रूप को उसके व्यक्तित्व का आधार बनाया है बल्कि निराला को पत्थर तोड़ती स्त्री के श्रम, संघर्ष के द्वारा उसका स्वतंत्र व्यक्तित्व दर्शाया है। वह पत्थर तोड़ती स्त्री किसी और पर आश्रित न होकर स्वयं पर आश्रित होकर अपने संघर्ष को अपने जीवन का आधार बनाती है और अपने स्वंतत्र अस्तित्व का निर्माण करती है। निम्न पंक्तियों द्वारा निराला ने व्यक्त किया है कि किस प्रकार पत्थर तोड़ती स्त्री को अपने आत्मबल पर विश्वास है–

''देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नही''[4]

पत्थर तोड़ती हुई स्त्री एक बार निराला को देखती है, परन्तु फिर अपने आत्मबल पर विश्वास करते हुए उन्हें नजरअन्दाज करके अपने कर्म में पुनः लीन हो जाती है। स्त्री परिवार की वह महत्वपूर्ण इकाई होती है, जिसके ऊपर सम्पूर्ण सामाजिक ढ़ांचा निर्भर होता है। स्त्री की प्रगति से ही सम्पूर्ण देश और समाज की प्रगति संभव है। धैर्य, सहनशीलता और कर्मठता स्त्री के सहज गुण होते है। ''तोड़ती पत्थर'' कविता में वर्णित स्त्री भी कोई देवी नही है, बल्कि वह अपने इन्हीं सहज गुणों के साथ हमारे सामने आती है। कविता की स्त्री कठोर धूप में और विपरीत परिस्थिति में भी अपने कर्म में लीन है। उसके भीतर संघर्ष करने की अदम्य क्षमता है, जो जीवन की असुविधा को न देखते हुए अपने श्रम के द्वारा ही अपने जीवन की संचालक है और पत्थर तोड़ती हुई स्त्री इस अद्भुत शक्ति को हमारे सामने लाती है। स्त्री की शक्ति मात्र शारीरिक क्षमता तक सीमित नही है, बल्कि उसमें दृढ़ इच्छाशक्ति, मानसिक स्थिरता और नैतिक बल भी सम्मिलित होते है। निराला निम्न पंक्तियों द्वारा व्यक्त करते हैं कि किस प्रकार दोपहर की कड़ी धूप में पत्थर तोड़ती स्त्री अपनी मेहनत को अपना आधार बनाती है:–

''चढ़ रही थी धूप;
गरमियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,

गर्द चिनगीं छा गईं,
प्रायः हुई दुपहर–
वह तोड़ती पत्थर।''[4]

कविता में स्वनिर्भर स्त्री का चित्रण–

स्त्री स्वनिर्भरता का अर्थ है, जीवन के हर स्तर पर चाहे सामाजिक स्तर हो या आर्थिक स्तर या फिर व्यक्तिगत स्तर हो, किसी अन्य पर आश्रित न होकर स्वयं सक्षम होना है। स्वनिर्भर स्त्री सदा अपने निर्णयों की निर्माता स्वयं होती है। वह अपने निर्णयों के लिए किसी दूसरे पर आश्रित नहीं होती है और न ही किसी के निर्णय मानने के लिए बाध्य होती है। कविता में पत्थर तोड़ने वाली स्त्री हथौड़े द्वारा कड़ी धूप में बिना विश्राम के पत्थर तोड़ने जैसा जटिल कार्य कर रही है और अपने श्रम के द्वारा सिद्ध करती है कि उसकी स्वनिर्भरता का आधार उसका कठिन परिश्रम है। इसी संदर्भ में निराला ने निम्न पंक्तियों द्वारा व्यक्त किया है कि किस प्रकार पत्थर तोड़ती स्त्री भारी हथौड़े द्वारा पत्थर पर प्रहार करने जैसा जटिल कार्य करती हैः–

''श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन, प्रिय–कर्म–रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार–बार प्रहार–
सामने तरु–मालिका अट्टालिका, प्राकार।''[4]

कठिन परिश्रम के द्वारा ही व्यक्ति अपने जीवन में आत्मसम्मान प्राप्त करता है और कविता में पत्थर तोड़ने वाली स्त्री भी अपने श्रम को आधार बनाकर एक सम्मानजनक जीवन जीने का प्रयास करती है। पत्थर तोड़ती हुई स्त्री किसी का इंतजार नही करती, बल्कि वो स्वयं के श्रम को आधार बनाती है और निरंतर अपने कार्य में लीन रहती है। पत्थर तोड़ती हुई स्त्री व्यवन्त करती है कि स्त्री को आश्रय की नही, बल्कि समानता की आवश्यकता है। उसका श्रम मात्र उसके जीवन को संचालित करने का माध्यम नही है बल्कि उसकी स्वतंत्र अस्तित्व का आधार भी है। निम्न पंक्तियों पर निराला ने दर्शाया है कि किस प्रकार पत्थर तोड़ती हुई स्त्री उन्हें देखती है, पर वो किसी पर आश्रित न होने के उद्देश्य से अपनी नजर हटा लेती हैः–

''देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा महज सितार,

सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झनकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा–
'मैं तोड़ती पत्थर।''[4]

स्वनिर्भरता मात्र आर्थिक स्वतंत्रता नही है, बल्कि विपरीत परिस्थिति का सामना करने की क्षमता और स्वयं निर्णय लेना भी है। कविता की पत्थर तोड़ने वाली स्त्री भी इन गुणों से सम्पन्न दिखाई देती है। वह दया की पात्र नही, बल्कि सम्मान की अधिकारिणी है।

समकालीन संदर्भ में 'तोड़ती पत्थर' की प्रासंगिकता

आज के युग में स्त्री स्वनिर्भरता और स्त्री सशक्तिकरण पर विशेष बल दिया जा रहा है। स्त्री हर क्षेत्र में अपनी नेतृत्व की क्षमता को सिद्ध कर रही है परन्तु समाज में आज भी पुरूषों के ऊपर आर्थिक निर्भरता, लैंगिक असमानता, और सामाजिक रूढ़ियो जैसी समस्याएँ मौजूद है। ऐसे समय में ''तोड़ती पत्थर'' जैसी कविता की प्रासंगिकता और अधिक महत्व रखती है। कविता में वर्णित स्त्री हमें यह स्मरण कराती है कि स्त्री की वास्तविक शक्ति उसके श्रम, स्वविश्वास और आत्मसम्मान में निहित है। निराला ने पत्थर तोड़ती हुई स्त्री में आत्मशक्ति की अद्भुत झलक देखी जिसमें यह पंक्ति विशेष रूप से प्रासंगिक है।

''सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झनकार''[4]

पत्थर तोड़ती स्त्री आज की स्त्री का प्रतीक है, जो कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए भी अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रही है और अपने मेहनत के दम पर समाज में सम्मानजनक स्थान प्राप्त करती है। पत्थर तोड़ती हुई स्त्री आज की स्त्रियों को भी उनके भीतर छुपे हुए या विस्मृत किये हुए साहस का स्मरण कराती है। ''तोड़ती पत्थर'' मात्र एक रचना नही है, बल्कि यह प्रेरणा है, प्रत्येक पीढ़ी की स्त्रियों के लिए कि उनको मात्र अपने भीतर की शक्ति और साहस को पुनः जागृत करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष–

निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि निराला की कविता ''तोड़ती पत्थर''स्त्री शक्ति, स्वनिर्भरता, आत्मसम्मान और संघर्षशीलता का प्रभावशाली चित्रण प्रस्तुत करती है। कविता में चित्रित पत्थर तोड़ती हुई स्त्री मात्र एक श्रमिक महिला नही है, बल्कि प्रतीक है, सम्पूर्ण भारतीय स्त्रियों के स्वाभिमान, साहस और शक्ति का साथ ही वह सिद्ध करती है कि स्त्री की वास्तविक शक्ति उसकी स्वनिर्भरता और कार्यनिष्ठा में निहित है। ''तोड़ती पत्थर'' कविता आज भी स्त्री सशक्तिकरण की अवधारणा को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और संदेश देती है कि स्त्री मात्र सहानुभूति की नही, बल्कि सम्मान, समान अवसर और स्वनिर्भर बनने की अधिकारिणी है। पत्थर तोड़ती स्त्री

आज भी समाज की महिलाओं का प्रतिनिधित्व करती है जो अपने मेहनत और आत्मबल से जीवन को आगे बढ़ा रही है। ''तोड़ती पत्थर'' कविता मात्र साहित्यिक रूप से नही, बल्कि सामजिक और मानवीय रूप से भी अत्यन्त प्रेरणा प्रदान करने वाली रचना है।

संदर्भ सूचीः–

1. Tripathi D- G- M-& Shukla D- S-(2023)- केदारनाथ अग्रवाल के काव्य में कृषक–श्रमिक जीवन का स्पन्दन. कुतप, 06(01), 103–107- https://doi-org//10-5281//zenodo-18745304
2. मोहना डा.सी. ''निर्मलाः महिला सशक्तिकरण, समकालीन नारीवादी विमर्श एवं सामाजिक न्याय'' International Journal of research, vol 12, issue 3, 2026, pages 43-46
3. Shukla S-& Tripathi G- M- (2022). अमरकांत के उपन्यासों का शिल्प–विधान. International Journal of Hindi Research 08(05)] 36–39- https://doi-org/10-5281/zenodo-18746025
4. निराला, सूर्यकान्त त्रिपाठी। ''तोड़ती पत्थर''। अनामिका/विधा विकास एकेडमी, 2025, पृ0, 83–84।
5. Tripathi] D. G. M. (2023). स्वातंत्र्योत्तर काल में व्यंग्यात्मक हिन्दी कविताओं के पुरोधारू नागार्जुन. शोध दिशा, 61, 255–262. https://doi.org/10.5281/zenodo.18745376
6. Tripathi] G- M- (2021). 'इन्हीं हथियारों से'ः आंचलिकता के तत्त्वों के परिप्रेक्ष्य में उपन्यास का अनुशीलन. International Journal of Hindi Research] 07(02)] 19–22- https: //doi-org//10-5281//zenodo-18746249
7. गंगवार दिपाली ''स्त्री–विमर्श सम्बन्धी चिंतन और हिंदी साहित्य'' International Journal of research, vol 12, issue 3, 2026, pages 55-58
8. शर्मा, रामविलास। निराला की साहित्य साधना। राजकमल प्रकाशन, 2023।
9. सिंह, इन्दराज। महिला सशक्तिकरण। डायमंडबुक्स।
10. https://sites.google.com/site/merispeech/Topics/speech-on-social-issues-and-awareness/nari-sasaktikarana
11. https://share.google/3EJnmjQVlVyl0mFjt
12. भारत में महिला सशक्तिकरण https://share.google/eYIXBHi84qXUxNraR